भगवत् कृपा

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संग पत्रिका

वर्ष 23 अंक : 7 | बुधवार, 26-7-2000 | वार्षिक चंदा : 50-00

ब्रह्मप्रवाह

भगवान श्री कृष्ण ने गीता के अंतिम रहस्यरूप में अर्जुन के साथ का 'सखा रुप संबंध' सर्वोत्तम बताया और उसे खुद के बराबर का और फिर भी स्वामीसेवकभाव से वर्तता सखा बना कर साथ में पुजवाया।

उसी प्रकार मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी ने ऐसे गृहस्थ हरिभक्त–रामभंडेरी, रैयो देसाई, अरजण बामणीयो और वेलो सथवारो जैसों को खुद के सखा गिनवा कर बड़े-बड़े परमहंसों को भी उनके दर्शन और समागम करने का भारपूर्वक सूचन किया।

यूं प्रगट स्वरूप के साथ **आध्यात्मिक** संबंध दृढ़ होते ही सर्वदेशीय समझदारी प्राप्त होती है और भगवान का उपकरण बन कर-निमित्त बन कर ऐसा भक्त– 'चैतन्य माध्यम के रूप में' प्रगट का सखा बनता है।

प.पू. स्वामीबापा (गुरुहरि योगीजी महाराज) अभी ऐसे एकांतिक भक्तों को तैयार कर रहे हैं और **सभी संत पार्षदों तथा हरिभक्तों को ऐसा गुणातीत स्वरूप बनाने का उनका ही दृढ़ संकल्प है।** तो ऐसी उनकी दृष्टि में आने के लिए श्रेयार्थी साधक निम्न मुद्दों के मुताबिक लग पड़ें।

1. प्रत्यक्ष गुरुहरि के प्रति सर्वोपरिकर्ता और अखंड दिव्यता का भाव दृढ़ करके अंतर से प्रसन्न कर लेने की तमन्ना या अभीप्सा या लगन जगाये।
2. ऐसे अचलमति वाले–प्रगट की अनन्य निष्ठा वाले एकांतिकों का प्रसंग करके उनके वचन में पल-पल वर्त कर–**किसी का भी दोष देखे बिना**–प्रगट स्वरूप की स्मृति रख कर सेवा करें।

   और
3. उनके अल्प संबंध वाले भक्तों की महिमा समझ कर उनके पास गरजु–दीन बन कर सुहृद्भाव रख कर गुणगान गाया करें। यानि कि (वच.) मध्य 24 और प्रथम 16 के मुताबिक की समझदारी वाला सहज वर्तन !

   तो, हमारी पूर्णाहुति होकर–मूल अज्ञान टल जाकर अक्षरधाम का सुख जीतेजी प्राप्त होगा। गुरुकृपा से–दृष्टि से हम प्रगट स्वरूप के ऐसे सखा जल्दी ही बन सकें यही प्रार्थना !

–प.पू. काकाजी महाराज

1.8.1968

रक्षाबन्धन...

'रक्षाबन्धन' के पवित्र दिन की मंगल बेला नज़दीक आ रही है... लौकिक समाज में 'रक्षा' की स्थूल परिभाषा यही है कि हमारे तन, धन, माल इत्यादि की रक्षा हो। और.... इसी तरह माँ-बाप बच्चों की रक्षा करते हैं, भाई बहन की रक्षा करता है, पति पत्नी की रक्षा करता है, सरकार प्रजा की रक्षा करती है।

परन्तु समय-समय पर अवतारों ने, ऋषि-मुनियों ने हमारे इन्द्रियों अंतःकरण के शत्रुओं से 'जीव की रक्षा' के रहस्य बताये हैं।

जीव की सच्ची रक्षा तो भगवान या भगवान अखंड रखे साधु द्वारा ही संभव है। हमारे भीतर में ही छिपी बैठी और हमारे जीव को दीमक की भांति चाटने वाली, जन्म-मरण के चक्कर में फंसाने वाले काम, क्रोध, लोभ, मोह, आशा, ईर्ष्या की वासना का दर्शन करा के, प्रसंग खड़े करके उन पर विजय दिलाने का अद्‌भुत कार्य भगवान रखे निर्मल संत करते हैं।

इसीलिए भगवान स्वामिनारायण ने गुणातीत भाव में अखंड रहते संतों की शुद्ध गुरु परंपरा अखंडित रख कर अपने आश्रितों को अद्‌भुत रक्षा देकर निर्भय–निश्चिंत किया। निष्ठा वाले मुक्तों के छोटे बच्चे को भी भीतर में यह निश्चय पक्का होगा कि मेरे साथ प्रभु हैं ही, मेरी रक्षा वे करेंगे ही। यह अनुभूति–यह अहसास कोई ज्योतिषी, सिद्ध-महात्मा या तांत्रिक नहीं करा पायेंगे।

अभी मनाली शिविर में अमदावाद से प.भ. समीरभाई आए हुए थे। उनके चार साल के लड़के नंदिश ने अपनी मम्मी को कहा कि–'मम्मी यह पहाड़ी रास्ते पर बस चल रही है और यह बस गिर जाए तो हमारी तो रक्षा होगी क्योंकि हमने कंठी पहनी है। पर, वह ड्राईवर का क्या होगा? उसने तो कंठी नहीं पहनी है।' यह बात भले मज़ाक रूप लगती है, लेकिन हमें 'कंठी' का महत्व बताती है कि वह स्वामिनारायण के भक्तों के लिए संतों द्वारा मिला कैसा अद्‌भुत रक्षा कवच है दूसरी ओर वह छोटे से बच्चे की निष्ठा का भी दर्शन कराती है कि उसके जीव में यह बात कितनी पक्की है कि प्रभु हमारे साथ हैं।

लेकिन साधक की दृष्टि से रक्षा कैसी होनी चाहिए? वह रहस्य इन सभी से अलग है। आइये, वह समझने 1975 'अक्षरपुरुषोत्तम सत्संग पत्रिका' में सद्‌विचार के रूप में संपादित प.पू. काकाजी की निम्न कथावार्ता का मनन-चिंतन करें.....

'भारतीय संस्कृति और आध्यात्मिक इतिहास के पन्ने पर रक्षाबन्धन के पर्व की महिमा खूब गाई गई है। इस महा मंगलकारी पर्व को सार्थक बनाने के लिए श्री सहजानंदस्वामी महाराज पृथ्वी पर पधारे और अपने आश्रितों की सारी जिम्मेदारी अपने सिर पर ले ली; बुरे प्रारब्ध अच्छे हो जाएं, रंक हो वह राजा हो जाए और काल-कर्म-माया से आश्रित जनों की रक्षा हो ऐसे आशीर्वाद सभी को दिए व उसके लिए एक सरल, सुगम, सचोट और सुन्दर मार्गदर्शन भी दिया।

तो ,ऐसे पवित्र और मंगलकारी पर्व के दिन साधकों को तो प्रभु के पास प्रहलाद् की तरह रक्षा की इच्छा–मांग करनी चाहिए। प्रहलाद् ने प्रभु के पास इतना ही मांगा कि–

''मेरे देह की जो आपने रक्षा करी उसे मैं 'रक्षा' नहीं मानता; लेकिन इन्द्रियों–अंतःकरण के भावों व गुण तथा देवताओं से मेरी रक्षा करना।''

हमें भी ऐसा ही मांगना चाहिए। तो महाराज को यही प्रार्थना कि–'हे प्रभु,

(1) आपकी कसनी व कसौटी में आप और आपके संतों-हरिभक्तों के प्रति मनुष्यभाव नहीं आए ऐसी दया करना;
(2) आपके संतों–हरिभक्तों की सेवा (वचनामृत) गढ़डा मध्य 41 के मुताबिक हो ऐसा खूब बल देना;
(3) तीनों प्रकार के कुसंग से रक्षा करना;
(4) अन्यों से टकराव या उल्झन-परेशानी में भी मैं खुद का ही दोष देखूं–खड़े हुए प्रसंगों का प्रेरक भी आपको ही मानूं ऐसा बल देना।'

भगवत्स्वरूप संतों के पास सच्चे दिल से इस तरह प्रार्थना करेंगे और रक्षा मांगेंगे, तो उनकी कृपा और प्रसन्नता के पात्र बन कर हर प्रकार से बल मिलेगा व सुखी हो जाएंगे..... रक्षाबंधन का पर्व सार्थक बन जाएगा।'

✡ ✡ ✡ ✡ ✡

'श्रवण, मनन, निदिध्यासन'

✡ **इस गुणातीत समाज की अखंडता, एकता व एकसूत्रता हमेशा बनी रहे.....**

महाराज के समय में संतों को महाराज ने पूछा कि तुम किसके हो? तो सभी ने अलग-अलग बताया–कोई नरनारायण देव के, कोई लक्ष्मीनारायण देव के, कोई वासुदेवनारायण के ! स्वामिनारायण का एक भी बचा नहीं !! ऐसे ही आज हम कहें कि हम तो वड़ताल वाले, अमदावाद वाले, बोचासण वाले, मणीनगर वाले, दादुभाई वाले.... –तो, हम इतिहास का पुनरावर्तन ही कर रहे हैं न ? क्या हम भूल गए कि स्वामी की बात प्र. 13–384 में स्वामी ने कहा–यहां के सत्संगी अलग और वहां के सत्संगी अलग यूं करने वाला–सत्संगी ही नहीं। अपनी-अपनी गली के कुत्ते भी इकट्ठे होकर दूसरी गली के कुत्तों को भगा देते हैं। क्या उसे कुत्तों की एकता बोली जायेगी ? वह

तो पशुबद्धि है। 'स्वामिनारायण महामंत्र' की द्विशताब्दी के उपलक्ष्य में मंत्र लेखन की पोथी भी यदि अलग-अलग निकालनी पड़े, फिर हम कौन-सी व कैसी एकता की बात कर रहे हैं? अरे ! 'स्वामिनारायण' के हम जो करीब से जुड़े हैं इनकी एक मंत्रपोथी नहीं हो सकती क्या? आज का बुद्धिमान समाज हमारी इन बातों को मान नहीं पायेगा। और..... प.पू. काकाजी ने तो आगे कहा ही है कि अलग-अलग प्रवाहों में मानने वालों.... एक उंगली–यूं टेढ़ी होगी, तो फोर्स नहीं आएगा।

प.पू. काकाजी के ही शब्दों में–इन सभी स्वरूपों की 'धूमकेतु' के रूप में ऐक्य परखने की हमारी दृष्टि बदलनी है।

- प.पू. काकाजी ने 'एकता' की बहुत अच्छी व्याख्या करी कि किसी का भी कोई दोष हो वो हम अपने सिर पर ले लें–वहां समझना हमारी एकता है। हम अगर यह कहते हैं कि उसका करा वो भोगे– तो वो हमारी एकता नहीं कही जायेगी।
- **प.पू. काकाजी की बातें आज भी हमारे हृदयाकाश और मन के झरोखे में आ खड़ी रहती हैं।**

('मोती बिखरे चौक में' पृ. हिन्दी-गुजरातीः 2)

मतलब कि–प.पू. काकाजी द्वारा करी बातें आज भी झरोखे में खड़ी इन्तजार कर रही हैं कि इस दिशा में ये कब चलेंगे ? पर, हम बातें अपने ढंग से लेते हैं या दूसरों पर लगा देते हैं।

- प.पू. काकाजी की पूरी बातों का निचोड़–सुहृदभाव ! दो जने मिल कर करो–पांच जने मिलकर करो.... पर, जिसे अपने मनमाने ढंग से जीना होगा वह दूसरों से मिलजुल कर मंदिर के-सत्संग के कार्यों को भी नहीं कर पायेगा; और.... अकेला कोई कितना ही करता होगा पर उसकी तो कोई वेल्यू नहीं।
- प.पू. काकाजी तो यहां तक कहते कि सुहृदभाव से वर्तना वह ब्रह्मस्वरूपभाव में वर्तने से भी अधिक है। कोई भी साथीदार कुछ कहे कि यह ऐसे करें वो हम सहर्ष मान लें–बस वही **सुहृद्भाव** !
- बड़प्पन तभी पा पायेंगे जब हम सबके पास झुक कर रहेंगे।
- हम यहां आए हैं साधु को सहायरूप होने, ना कि उनके लिये एक समस्या बनने !
- खानदानी वही कही जाये कि–हमसे कोई गल्ती हो जाए पर यदि कोई उसे समझये तो गल्ती को गल्ती स्वीकारे और फिर दोबारा वो गल्ती ना होने देने खुद को बदल कर चलने लग पड़े..... ऐसे सेवक पर साधु का प्यार उमड़ पड़ता है।
- कोई कहता है कि हम पू. काकाजी के हैं। हम सुहृद्भाव से रहते हैं, तो हम काकाजी के हैं। पर, साथीमुक्तों को यदि ऐसा कहते हैं कि मुझे सलाह देने वाला तू कौन? तो हम पू. काकाजी के नहीं हैं।
- प.पू. काकाजी को हमें यही पक्का कराना था कि भगवान प्रगट हैं.... उन भगवान की हाज़िरी पल-पल मानकर, उन्हें प्रत्यक्ष करके मुक्तों के साथ बिना कोई भेदभाव–मिलजुल कर सुहृद्भाव से जीता हुआ एक समाज का–गुणातीत समाज का सर्जन करना वही प.पू. काकाजी की ख्वाईश थी।
- 26 जनवरी 1986 में प.पू. काकाजी ने इस प्रवचन के रूप में हमारी सच्ची आंतरिक अवस्था दिखाने 'शीशा' दिया है कि तुम अपने आप को देखो कि तुम कहां ठहरे हो ? किसलिए आए थे, क्या कर रहे हैं ? किस दिशा में जा रहे हैं ? चलते-चलते कहां रुक कर बैठ गए हैं ? कहने में प.पू. काकाजी ने कोई कसर बाकी नहीं रखी। सब कुछ कह दिया है।
- प.पू. काकाजी की कही बातों की ज़रा भी उपेक्षा करेंगे या नज़र अन्दाज करेंगे तो हमारी प्राप्ति और स्थिति में काफी फर्क पड़ जायेगा। वे जो हमें देना चाहते थे या जिस कक्षा पर हमें पहुँचाना चाहते थे–वो पा नहीं सकेंगे।
- इनकी करी बातें 'शाश्वत्–कालातीत हैं' यानि–आज भी इन बातों को लेकर चल पड़ेंगे तो वह अब भी इतनी ही श्रेयकारी रहेंगी।
- 'पत्र संजीवनी' और 'ब्रह्मप्रवाह' ये दो किताबें चमत्कारी हैं। जब भी कोई समस्या हो तो 'स्वामिनारायण–स्वामिनारायण !' भजन करते हुए 'हे काकाजी ! मुझे अभी क्या करना है? काकाजी मुझे हल दो.....' ऐसी प्रार्थना करके किताब खोलेंगे तो हमें समाधान मिलेगा ही।
- प.पू. काकाजी को जिन-जिन्होंने धून्य करते हुए देखे हैं..... दर्शन किए हैं वो भी जिंदगी का एक सुनहरा मौका था।
- हम हर एक को चाहना रहती है कि हम सत्पुरुष के दिल की धड़कन बनें। पर, हम सत्पुरुष के दिल की धड़कन तभी बन सकते हैं जब उनकी मर्जी में अपने अहं को छोड़ने–मरमिटने के लिए तैयार हों। खुद जिंदा रह कर कोई दिल की धड़कन नहीं बन सकता। मर कर जो जीए–'मैं कुछ नहीं'–उनके लिए ये बातें हैं। हम खुद नहीं मर सकते–अहं को छोड़ नहीं सकते, पर–कोई दूसरा हमारे अहम् पर चोट लगाये तब तो स्वीकार करें।
- **'सुहृदभाव रखेंगे तो हमारे सारे स्वभाव-प्रकृति दोष टल जायेंगे ही।'**

इस सत्य का भरोसा हमें रखना है। वो भरोसा हम नहीं रख पाते, वह हमारा मायिकभाव है।

- अपना मन छोड़कर जिस-जिसने प.पू. काकाजी को निहारा, उन्हें वो उतने ज्यादा करीब नज़र आए। करीब यानि–काकाजी मेरे हैं। जहां मन आ जायेगा वहां लगेगा कि फलां के ज्यादा हैं, मेरे तो कम हैं।

✡ ✡ ✡ ✡ ✡

'ताड़देव' की गतिविधियाँ.....

✡ हर साल की तरह इस साल भी प.पू. गुरुजी ने हरिभक्तों को लाड़ लड़ा कर अनेक स्मृतियाँ देने और हम पर अति करुणा करके सही आध्यात्मिक जीवन जीने की एक अद्‌भुत सूझ देने कुल्लु-मनाली का प्रोग्राम बनाया..... प.पू. गुरुजी के साथ अत्यंत प्रीति से जुड़े प.भ. प्रमीत संधवी ने पिछले साल की तरह इस साल भी प.पू. गुरुजी व सभी मुक्तों के लिए अच्छी व्यवस्था करने पहले खुद कुल्लु-मनाली जाकर करीब 30-35 होटल–रीसोर्ट्स में घूम कर होटल हाईलेन्ड में बुकिंग करवा रखा था..... स्वयं के लिए जो सुविधा देखे उससे भी कई गुणी अच्छी सुविधा की भावना प.भ. प्रमीतभाई ने रखी !

प.पू. गुरुजी के साथ करीब 180 हरिभक्तों का कुल्लू-मनाली जाने का प्रोग्राम बना..... जो इस ट्रिप में आए थे, उन सबके जीवन का केन्द्रबिन्दु प.पू. गुरुजी व मंदिर ही है। ये हरिभक्त गृहस्थाश्रम में होते हुए भी–जगत में रहते हुए भी कभी भी सिनेमा, होटल या अपने परिवार के साथ कहीं घूमने–करने नहीं जाते। उनका जीवन बस घर से मंदिर और मंदिर से घर....! संत को ही सर्वस्व मान कर संत के लिए ही मंदिर के लिए ही सेवा के रूप में ही पूरा साल जीवन जीते हैं.... सो, इन साधुओं, युवकों, बहनों, गृहस्थों की पूरे वर्ष की कसनी, भीड़ा-भक्ति, सेवा आदि को देखकर इनके रीलेक्षेशन के लिए ही प.पू. गुरुजी ने यह प्रोग्राम बनाया था.....

16 जून की सुबह पांच गाड़ियों द्वारा प.पू. गुरुजी व करीब 20 हरिभक्त कुल्लू-मनाली जाने निकले.... अन्य मुक्त रात को 9.30 बजे चार बसों द्वारा रवाना हुए। पानीपत में प.भ. पुनीतजी के यहां उनकी भावना को ग्रहण करते हुए नाश्ता करके व उन्हें भी साथ लेते हुए प.पू. गुरुजी बिलासपुर जाकर रात को रुके। सुबह बिलासपुर से मनाली के लिए निकले। और..... चार बसों से निकले भक्तजन धून्य-भजन-प्रार्थना व आनंद–किल्लोल करते-करते सुबह आनंदपुर साहेब गुरुद्वारे में पहुंचे। वहां स्नानादि करके पूरे दिन सफर करते हुए शाम को करीब 7.00 बजे मनाली पहुंच गए। प.पू. गुरुजी भी करीब 5.30 बजे होटल हाईलेन्ड पहुंच गए थे.... वहां पहुँचते ही इन्होंने सबसे पहले सारी एकोमोडेशन का जायज़ा लिया और तब ही जाकर निश्चिंत हुए। दूसरी ओर बसों से उतरते ही प.पू. गुरुजी के दर्शन करके व रहने की इतनी अच्छी सुविधा एवं ग्रीनरी-के बीच होटल हाईलेन्ड की इतनी अच्छी लोकेशन देखकर सभी जैसे थकान भूल गए..... रात को खाना खाकर सभी विश्राम में गए.....

18 जून की सुबह पहली सत्संगसभा 8.30 पर रखी। रास्ते में प.पू. गुरुजी प.पू. महंतस्वामी द्वारा समझये वच. म.15 व वच. म.9 की ओडियो कैसेटस सुनते हुए आए थे..... प.पू. गुरुजी को वे सारी बातें खूब पसंद आई। पर, वो कैसेट गुजराती भाषा में होने के कारण प.पू. गुरुजी ने वो सारी बातें हिन्दी भाषा में सभा में अपने लाक्षणिक ढंग से और भी बारीकी से समझईं..... महाराज के समय में हठ पर अड़े रहकर मछियाव गाँव की फईबा ने महाराज की प्रसन्नता खो दी। अलैया खाचर ने दो हज़ार जनों को सत्संग कराया, पर मान के कारण महाराज का संबंध खोया। दादाखाचर के साथ की ईर्ष्या के कारण जीवाखाचर महाराज के खूब करीब रहते हुए भी ईर्ष्या की आग में जलते रहे और महाराज की मूर्ति का सुख प्राप्त नहीं कर पाये। 18 जून की शाम को सभा में भी स्वभाव छोड़ने की बात को लेकर ही प.पू. गुरुजी ने बातें समझईं.....'

19 जून की सुबह प.पू. गुरुजी के साथ सभी 'रोहतांग पास' गए..... वहां आनन्द करके शाम को वापिस आए और सभी ने प.पू. गुरुजी को प्रार्थना करी कि हमें कहीं ज्यादा घूमना-करना नहीं है, आपका ही लाभ लेना है। आपके पास ही बैठना है..... दो दिन कथावार्ता का सुबह-शाम अखाड़ा जमा रहा.... 21 की दोपहर दो-तीन घंटे के लिए सोलन वैली घूमने गए। शाम को फिर प.पू. गुरुजी की कथावार्ता का लाभ लिया।

प.पू. गुरुजी ने कुल चार दिन में छः सभाएं करी और सभी में मूल वृत्ति, प्रकृति-स्वभाव यानि हठ, मान, ईर्ष्या पर ही मूलतः ज़ोर दिया। कई बार उनके समझने–कहने के ढंग से यूं लगता था कि भीतर में मानो अब उनको एक दर्द हो या वे अब थक गए हैं कहते-कहते कि अब तो चलो ! और प्रगट प्रभु की सर्वोपरिता की बात करते-करते वे एक जगह तो यहां तक बोल पड़े कि 'अब तो 63 साल हो गए। अब भी यह सर्वोपरिता की बात नहीं कहेंगे–समझेंगे तो फिर कब करेंगे? सो, अब तो मान कर चल पड़ो।'

और सच है कि समय तो अपनी तेज़ रफ्तार से भागे जा रहा है। तो, जैसे प.पू. काकाजी कहते कि समय की गम (ख्याल) पड़ जाए– उसे कहते हैं समागम ! तो, अब तो जाग्रत बनें-वेल्यू समझें।

22 जून की सुबह तो वापिस दिल्ली आने निकलना था.... किसी को पता ही नहीं चला कि पांच दिन इतनी जल्दी कब निकल गए..... सभी को प.पू. गुरुजी द्वारा करी कथावार्ता में ही सबसे अधिक आनन्द आया..... भीतर में हर एक ने अंतर्दृष्टि करी कि **सच में हमने अभी तक सही ढंग से सत्संग किया ही नहीं है....** प.पू. गुरुजी हमसे कितनी ऊंची आशा रख कर बैठे हैं और हम क्या कर रहे हैं? मनाली से वापिस आते हुए रास्ते के 'सलापड़' गांव में दिल्ली निवासी

बक्शीचंदजी के साढु साहब प.भ. जगदीशजी के यहां दोपहर को ठाकुरजी को थाल लगाया। कुदरती सौन्दर्य के बीच बाबा बालकनाथजी के मंदिर में सभी भक्तों ने प्रसाद लिया। अड़ौस-पड़ौस की बहनें मंदिर में भजन करते-करते रोटी बनाने की सेवा कर रही थीं। यूं देहाती ढंग से संतों का जो स्वागत करा उससे सभी खुश हो गए। बहुत ही भावना भरे दिल से प.भ. जगदीशजी ने सारी व्यवस्था करी हुई थी। इस परिवार व पड़ौसियों की भक्ति-भावना, आनंद व उत्साह देख कर सभी भक्तों का दिल गिलगिला हो गया।

बसों में सभी आनंद-भजन करते हुए मानो पूरे साल का खज़ाना भर कर वापिस दिल्ली आ गए..... प.पू. गुरुजी गाड़ी द्वारा आए थे। सो, वे तड़के तीन बजे पहुंचे.....इतने थके होने के बावजूद सब हरिभक्तों के आने की राह देख कर वे बैठे थे..... करीब साढ़े पांच बजे बसे आईं.... प.पू. गुरुजी को बाहर ही खड़े देख कर सभी भक्तों की आंखें नम हो गईं कि ओहो ! प.पू. गुरुजी की हम सब के प्रति कैसी अनुपम प्रीति !

मनाली शिविर में सभी को इतना अधिक आनन्द आया कि प.भ. विनोदभाई–प.भ. प्रकाशभाई के मित्र **प.भ. रवि गुप्ता** सहज ही सभा में बोल उठे कि–**'मैं अब तक बहुत घूमने-करने गया हूँ, पर सही मायने में टूर करी कहा जाए तो यह पहली ही है' और..... प.भ. मक्खनलालजी** ने तो प.पू. गुरुजी को यहां तक कह दिया कि **'अगले साल ऐसा प्रोग्राम बनाओ और कोई व्यस्तता या किसी भी वजह से मैं आने को मना कर दूँ, तो भी आप आज्ञा देकर जबरन ले जाना।'**

यूं मनाली में स्वभाव टालने पर ही मुख्यतः कथावार्ता हुई और संजोगवश मनाली से वापिस आते ही प.पू. काकाजी द्वारा 1975 में स्वभाव टालने का सर्वोपरि उपाय बताते हुए करी कथावार्ता की पत्रिका प.पू. गुरुजी के पढ़ने में आ गई..... आओ, इसे पढ़ें.... समझें और मनन-चिंतन करके वर्तन में लायें।

स्वभाव टालने का सर्वोत्तम उपाय कौन-सा?

प.पू. प्र.ब्र.स्व. योगीजी महाराज ने सारंगपुर में संतमंडल तथा (अहमदाबाद) बकरीपोल वाले पू. अंबालालभाई व अफ्रीका वाले पू. अंबालालभाई और मुक्तराज दादुभाई (प.पू. काकाजी) की हाज़िरी में स्वभाव टालने के बारे बताया था कि प.पू. शास्त्रीजी महाराज जैसे गुरु मिलने के बाद स्वभाव तो सच में टल जाने चाहिए, लेकिन **हमें टालने ही नहीं होते, सो वो रहते हैं।** स्वभाव के साथ हमें मित्राचारी है, इसलिए उनका अनादर नहीं होता; तभी तो भजन-भक्ति करने के बावजूद भी स्वभाव टिके रहते हैं–टलते नहीं हैं। पर, सत्पुरुष को मन सौंपे और **निष्कपटभाव से सत्संग करें** तो स्वभाव तत्काल टल जाएं। ब्र.स्व. गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज इस हेतु भक्त चिंतामणि प्रकरण 68 का पहला अनुच्छेद पढ़वाते।

हमें इसका रहस्य यूं समझना है कि साक्षात् स्वरूप जो मिला है उसका मनन द्वारा संग करके भजन-भक्ति करा करनी और वच.म. 32 के मुताबिक प्रत्यक्ष स्वरूप में दिव्यभाव रख कर महिमा का विचार करते रह कर उनके अनुसंधान में कथावार्ता–गोष्ठि किया करनी। इससे भी अधिक, संत को **जो ना जंचता हो वह नहीं करना।** यूं कोई भी श्रेयार्थी साधक ऐसे भजन करे तो स्वभाव तत्काल टल जाएं।

ऐसे दूसरे साधन में वच. म.7, प्र. 67 में 'संत के वचन से अतिशय सेवा' बताई। परन्तु, उसमें–**भक्तों की जड़-प्रकृति के स्वभाव और उससे उत्पन्न-प्रवृत्त क्रिया की ओर न देख कर, बल्कि उनके स्वभाव को जँचा कर–'उन्हें प्रगट का संबंध हुआ है ना ?' ऐसा केवल दिव्यभाव रख कर महिमा से सेवा करते रहना पड़े।**

तीसरा उपाय अधिक मुश्किल है और उसमें वच.म. 37 के मुताबिक खुद को तुच्छ मान कर टोकने-डाँटने वाले का गुण ही लें और उसके वचन परमहितकारी मान कर पश्चाताप करें, तो भले चाहे कैसी भी (त्रिकाल में ना टले ऐसी) प्रकृति और स्वभाव हों वे टल जाते हैं।

शास्त्रकारों ने ज्ञान द्वारा, सांख्य द्वारा, उपशम द्वारा स्वभाव या प्रकृति टालने की कई रीति बताई है। फिर भी उससे वह निर्मूल नहीं होती। सो, ऊपर बताई तीन रीतियों में से खुद के अंग के मुताबिक किसी भी एक रीत को शूरवीरता से अमल में रखनी, तो वच. प्र. 78 में बताए मुताबिक हरि और हरि के जन की उस पर दया होकर बल मिल जाता है।

स्वभाव टालने का अशक्य कार्य आज गुरुहरि ने शक्य और सरल बना दिया है। सारंगपुर में प.पू. स्वामिश्री (गुरुहरि योगीजी महाराज) ने प्रसन्न होकर प्रसन्नतापूर्वक बताया था कि प्रहलादजी को भगवान 6 महीने में वश हो गए थे, लेकिन अभी तो 6 घंटे में वश हो जाएं ऐसा है। संक्षिप्त में–गद्गद् कंठ से प्रार्थना करें तो 7 दिन में स्वभावरहित हो जाएं ऐसी महत्कृपा फिलहाल तो है !

★ अमदाबाद के अपने आत्मीय स्वजन प.भ. भाविनभाई की ससुराल 'वापी' निवासी डॉ. भगवतीप्रसादजी व परिवार प.पू. गुरुजी के परिचय में आए और जैसे पूर्व का ही संबंध हो इस प्रकार खूब आत्मीयता से सत्संग से जुड़ गए.....प.भ. भगवतीप्रसादजी के यहां प.पू. गुरुजी तीन साल पहले गए थे.....तब से प.भ. भगवतीजी की खूब इच्छा थी कि प.पू. गुरुजी दोबारा दो-तीन दिन के लिए रुकने के लिए आएं..... उनकी भावना व लगाव के वश होकर प.पू. गुरुजी ने वड़ोदरा के साथ-साथ वापी का प्रोग्राम बनाया.....5 जुलाई की शाम को पश्चिम एक्सप्रैस से दिल्ली से निकले....सुरत स्टेशन पर पता चला कि वापी में तीन-चार दिन से खूब तेज बरसात हो

रही है और 'वापी' में इसी कारण सभी खूब चिंतित भी थे। पर प.पू. गुरुजी के वहां पहुँचने से आधा घंटा पहले ही बरसात बंद हो गई....भगवतीप्रसादजी व सारे परिवार की खुशी तो जैसे समाती ही नहीं थी। घर पर शादी का माहौल हो ऐसा लगता था। भगवतीप्रसादजी के चारों दामाद, उनके लड़के प.भ. ज्योतिनभाई, प.भ. महेन्द्रभाई पटवारी व उनके लड़के प.भ. राकेशभाई पटवारी एवं सगे-संबंधी—प.भ. अशोकजी, प.भ. मणीभाई, प.भ. वीरेनभाई, प.भ. दौलतभाई वगैरह सभी बहुत ही भक्तिभाव से सेवा में खड़े पांव थे.....प.भ. अशोकजी वगैरह ने गाड़ियों आदि की भक्तिभाव से जो व्यवस्था करी उससे सभी को बहुत सुविधा रही। मुंबई से प.भ. ओ.पी. अग्रवालजी, प.भ. निरंजनभाई, पू. सोहिणी बहन व सूरत से प.भ. अमृत वडिया साहेब तथा सौ. भावना बहन खास प.पू. गुरुजी के दर्शन करने आए.... अमदावाद मंडल भी वहां दर्शन, सेवा, समागम का लाभ लेने पहुंच गया था....

प.भ. पटवारीजी के यहां प.पू. गुरुजी के ठहरने की व्यवस्था करी गई थी.....प.भ. पटवारीजी ने पूरा घर प.पू. गुरुजी व भक्तों के लिए एकदम खुला छोड़ दिया था। पटवारीजी का घर जैसे मंदिर ही बन गया था। प. पू. गुरुजी तीन दिन वहां रुके....महाराज का जीवन चरित्र, वच.म.37, प्र.67 व स्वभाव छोड़ने की अनेक कलाएं बता कर बहुत ही मार्मिक व बारीक बातें समझई... इन तीन दिन दौरान प.पू. गुरुजी व सभी दमण में प.भ. ओ.पी. अग्रवालजी की फैक्टरी , प.भ. अशोकजी की फैक्टरी, प.भ. अशोकजी के साझेदारों एवं प.भ. दालिया साहब के साढू प.भ. भरतभाई के घर पर पधरामनी के लिए गए.... सच में वापी के मुक्तों का सेवाभाव देखकर सभी नतमस्तक हो गये थे। दि. 9 जुलाई को वहां से वापसी के रास्ते में भरुच प.भ. भगवतीप्रसादजी के दामाद प.भ. आशुतोषजी के यहां ठाकुरजी का थाल करके महाराज के समय में पू. आनंदस्वामिजी द्वारा बनाए मंदिर के दर्शन करने गए.....

भरुच से निकल कर शाम को करीब 7.30 को वडोदरा प.भ. जयेशभाई के यहां पहुँचे....वहां से रात को दिल्ली के आत्मीय स्वजन प.भ.निर्भय भारद्वाज—डॉ. वर्षा के लड़के जय की शादी में प.पू. गुरुजी आशिष देने गए.....रात को प.भ. जयेशभाई के यहां ठहरे....

वड़ोदरा के हमारे आत्मीय स्वजन प.भ. गिरिशभाई का विवाह भी 9 जुलाई को ही संपन्न हुआ था। प.भ. गिरिशभाई व परिवार को प.पू. गुरुजी के प्रति अत्यधिक लगाव है....सो, 10 जुलाई की सुबह वहां आशीर्वाद देकर प.पू. गुरुजी अमदाबाद के लिए निकले। एक दिन अमदावाद में प.भ. एन.जी. पटेल साहेब, प.भ. पकाई साहेब व भक्तों को मिल कर दूसरे दिन 11 जुलाई की सुबह दिल्ली वापिस पहुँचे...

इस ट्रिप के दौरान सभी का भक्तिभाव, सेवा-भावना व जीवन में प्रभु का ही प्रथम स्थान रख कर जीने वाले परिवारों को देख कर प.पू. गुरुजी खूब प्रसन्न नज़र आ रहे थे....वापी, मुंबई, भरुच, बड़ौदा, अमदावाद के इन हरिभक्तों की भावना को अंतर से धन्यवाद-धन्यवाद !

✡ ✡ ✡ ✡ ✡

व्रतोत्सवसूची

(1)	दि. 27.7.2000	गुरुवार	—	एकादशी, व्रत
(2)	दि. 10.8.2000	गुरुवार	—	पवित्रा एकादशी, व्रत,
(3)	दि. 15.8.2000	मंगलवार	—	श्रावणी पूर्णिमा-राखी, भारत-स्वातंत्र्य दिन
(3)	दि. 23.8.2000	बुधवार	—	जन्माष्टमी, व्रत
(3)	दि. 26.8.2000	शनिवार	—	एकादशी, व्रत

TO,

Air Mail
'**Bhagwatkripa**' Monthly Magazine
Despatched on 25/26 of every month
If undelivered please return to :—
Owner, Publisher, Editor :—
SHRI PRABHAKAR RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY—DELHI
'Tardeo', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg,
Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 7229327, 7249327
Type Setting : **SHAYOKA Type Setting**
Rama Vihar, Delhi-110081 Phone: 5953035
Printed at : **Bharat Packaging and Allied Industries**
C-2/12, Mayapuri Industrial Area, Phase-II, New Delhi-110 064
Tel.: 5401210, 5402393